Name :- Soni Kumari
class : B.A II
Deptt : Sanskrit

नस्तद्धिते

प्रस्तुत सूत्र अव्ययीभाव समास के अन्तर्गत एक विधिसूत्र है। सूत्र की स्पष्टीकरण के लिए 'भस्य' और - टेः तथा अल्लोपोऽनः से लोपः की अनुवृत्ति करते हैं। सूत्रस्थ 'नः' भस्य का विशेषण है। अतः इसमें तदन्त विधि हो जाती है। 'अङ्गस्य' का अधिकार प्राप्त है। अतः सूत्र का अर्थ होता है — तद्धित प्रत्यय परे रहने पर नकारान्त 'भ' संज्ञक अङ्ग के 'टि' का लोप हो जाता है।

जैसे :— 'उपराजन् अ' इस स्थिति में 'उपराजन्' भ संज्ञक अङ्ग है और उसके अन्त में नकार भी है। अतः तद्धित प्रत्यय (टच्) परे रहने के कारण प्रकृत सूत्र से टि (अन्) का लोप होकर 'उपराज् अ' = 'उपराज' शब्द बनता है।

इससे 'सु' विभक्ति में 'उपराजम्' पद बनता है। इसी प्रकार 'आत्मनि अधि (आत्मा के विषय में)' इस विग्रह में 'अध्यात्मम्' रूप होता है।